जोराम यालाम की 'तानी कथाएँ' में अभिव्यक्त अरुणाचली लोकवृत्त

विक्रम कुमार

अरुणाचल प्रदेश भारत के पूर्वोत्तर में बसा प्राकृतिक-सांस्कृतिक संसाधनों से समृद्ध एक बेहद खूबसूरत राज्य है। अरुणाचल प्रदेश के लोकवृत्त और इसकी बुनावट को समझने के लिए यहां के लोकजीवन और लोककथाओं को समझने और जानने की आवश्यकता है। इस प्रदेश में जगह-जगह लोककथाओं की मौजूदगी व्यापक रूप में देखने को मिलती है। अरुणाचल प्रदेश आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ आदिम समाज में लिखित सामग्री का प्रचलन बहुत ही कम रहा है, यहाँ की आदिम परंपरा मौखिक ज्ञान की परंपरा रही है। मौखिक ज्ञान का प्रभुत्व होने के कारण लोककथाओं का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। एक समय लोककथाएँ सामाजिकता, नैतिकता और बौद्धिकता का प्रमुख स्रोत रही हैं। लोकथाएँ मनुष्य की आदिम आवाज हैं, जहाँ से मनुष्य और समाज को देखने की एक नई दृष्टि मिलती है। लोककथाएँ समाज में नीतिगत मान्यताएँ स्थापित करने में एक समय शास्त्र का भी काम करती थीं। जहाँ से समाज आचार-विचार के लिए प्रेरणा ग्रहण करता था। अरुणाचल प्रदेश का आरंभिक साहित्य मौखिक भाषिकी के साथ विकसित हुआ है। अरुणाचल प्रदेश के वर्तमान को अगर समझना हो, तो यहाँ की लोककथाओं और लोकजीवन को भी समझना होगा। प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण यह प्रदेश अपने सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक ताने-बाने से जिस तरह से जुड़ा हुआ है, वह सहज ही आकर्षित करता है। सांस्कृतिक जुड़ाव किसी समाज और मनुष्य के लिए आवश्यक है।

अरुणाचल प्रदेश में तीस से अधिक जनजातियां निवास करती हैं, जहाँ सभी जनजातियों की अपनी एक स्वतंत्र बोली है। सभी जनजातियों की अपनी लोकथाएँ हैं, अपनी मान्यताएं हैं। 'सांस्कृतिक विविधता' का जो अर्थ संदर्भ है, वह यहां के विभिन्न आदिवासी समुदाय की लोकथाओं में देखा जा सकता है। अरुणाचल प्रदेश के भाषाई स्वरूप को देखें, तब यहाँ सभी जनजातियों की अपनी बोली है, अपनी भाषा है। वही अगर भाषाई स्वरूप को अरुणाचल प्रदेश की संपूर्णता में देखें तब भाषाई एकात्मकता के रूप में जो भाषा यहाँ हमें मुख्य भूमिका में दिखाई देती है, वह हिंदी ही है। अरुणाचल प्रदेश में हिंदी आपसी संवाद की भाषा है। हिंदी की इस भूमिका को इस रूप में रेखांकित करने योग्य है कि यहाँ यह भाषा प्रचार-प्रसार के माध्यम से विस्तृत और समृद्ध नहीं हुई है और न ही किसी दबाव के तहत हिंदी को यहाँ के लोगों ने अपनाया है, बल्कि अरुणाचल प्रदेश के निवासियों ने इसे सहज ही स्वीकार किया है, इसे ग्रहण किया है। मेरा तो यह भी मानना है कि किसी भी भाषा का विस्तार प्रचार- प्रसार और दबाव के साथ कभी नहीं हो सकता है, जब तक जन-मन किसी भी भाषा को सहज स्वीकार्य नहीं करता है तब तक वह उसे आत्मसात भी नहीं कर सकता है। इसे ग्रहण करने में किसी को भी हिचकिचाहट होगी। हिचकिचाहट की स्थिति में कोई भी भाषा कभी भी एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती है । अगर भाषा में सहजता नहीं है तो इसे अपनाने में भी अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

स्वतंत्रता के बाद अरुणाचल प्रदेश में कई ऐसे लेखक हुए, जो हिंदी में लेखन कार्य कर रहे हैं। हिंदी साहित्य की समृद्धता में अरुणाचल प्रदेश के लेखकों का भी मुख्य योगदान है। इन लेखकों ने अपनी रचनाओं

के माध्यम से हमें अरुणाचल प्रदेश की सांस्कृतिक अवस्थिति, सामाजिक रूपरेखा और आदिवासी समाज की दुनिया से अखिल भारत का परिचय कराया है। किसी भी समाज को जानने और समझने में वहां के दर्शन और साहित्य की विशेष भूमिका होती है। निश्चित रूप से यहाँ के लेखकों को पढ़कर हम अरुणाचल प्रदेश के लोकवृत्त, बुनावट-बनावट से परिचित हो सकते हैं। ऐसे ही एक लेखिका हैं जोराम यालाम, जिनकी रचनाओं में अरुणाचल प्रदेश का लोकवृत्त दिखाई देता है। यहाँ हम जोराम यालाम की रचनाओं के साथ इस प्रदेश से रू-ब-रू होंगे, लेखिका राजीव गांधी विश्विद्यालय में हिंदी की प्रोफेसर हैं और अरुणाचल प्रदेश का प्रतिनिधित्व अखिल भारत में करती रही हैं। हिंदी में इनकी कई रचनाएँ हमारे सामने हैं, लेकिन यहाँ हम तानी कथाओं के विशेष संदर्भ में लेखिका के पक्ष और अरूणाचल प्रदेश का जो लोकवृत्त है, उसे देखेंगे। तानी कथाएँ, जिसके माध्यम से लेखिका ने आदिवासी समाज, अरुणाचल प्रदेश की संस्कृति और इसकी अवस्थिति का चित्रण और यहाँ की चुनौतियों को बेहतरीन तरीके से रेखांकित किया है। इस पुस्तक को लेखिका एक सुंदरतम यात्रा मानती हैं, वे इस पुस्तक को आदिवासी जीवन की गाथा कहती हैं, लेखिका इस पुस्तक के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के अंतर्निहित संवाद को रेखांकित करती हैं। आज मनुष्य का संवाद प्रकृति के साथ नहीं रह गया है, हम सभी इस बात से परिचित हैं कि कुछ दिन पहले ही अमेजन के हजारों एकड़ जंगल आग के हवाले हो गए, अमेज़न के जंगलों में लगी आग मनुष्य की गलतियों की ही एक जीती जागती तस्वीर है। यह एक उदाहरण है, मनुष्य और प्रकृति के साथ क्षीण होते संबंधों की, ऐसी तस्वीरें जब भी हमारे सामने होती हैं, तब-तब तानी कथाएँ और जंगली फूल जैसी पुस्तकों का महत्त्व बढ़ जाता है।

साहित्य में समाज की अभिव्यक्ति होती है। विचारों की दुनिया बहुत ही गहन होती है। व्यक्ति, समाज औऱ राष्ट्र को समझने के लिए समाज की विचार संस्कृति को समझना महत्त्वपूर्ण है। आदिवासी समाज के जल जंगल पर जिस तरह के खतरे मंडरा रहे हैं, वह चिंतनीय है। जगह-जगह पहाड़ों को नष्ट किया जा रहा है। पेड़-पौधे काटे जा रहे हैं। बाजार और पूंजीवाद ने मनुष्य के साथ प्रकृति को एक कमोडिटी में तब्दील कर दिया है। ऐसी स्थितियों के बीच आदिवासी समाज की लोककथाएँ हमारी मदद कर सकती हैं। लोक कथाओं का संयोजन और संपादन दुरूह कार्यों में से एक है। एक लोककथाएँ समाज में अलग-अलग रूपों में मौजूद होती हैं, जिनमें सत्यता की पहचान करना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसमें काफ़ी समय और ऊर्जा लगती है। लेखिका के लिए तानी कथाओं का संकलन आसान कार्य नहीं था। तमाम मुश्किलों और चुनौतियों के बीच इसे संकलित किया गया है। आज आदिवासी समाज बाह्य और आंतरिक कई चुनौतियों से संघर्ष कर रहा है। उन तमाम चुनौतियों के बीच एक चुनौती आदिवासी समाज के सामने धर्मांतरण की है। आदिवासी दुनिया में धर्मांतरण की शिकायतें बढ़ रही हैं। हम सभी इस बात से परिचित हैं कि धर्म फौरी तौर पर सिर्फ व्यक्ति को ही नहीं बदलता, बल्कि वह आपकी संस्कृति और सभ्यता को भी गहराई से प्रभावित करता है। यह बात सभी को समझने की आवश्यकता है। इस बात को भी समझने की जरूरत है कि आदिवासी समाज की भी एक खुद की निजी अस्तित्वगत दुनिया है, जहाँ उनका धर्म,संस्कृति और निजी अस्तित्वगत संबंध सांस लेता है। आज आदिवासी समाज को कोई हिंदू कह रहा है तो कोई ईसाई, तो कोई कुछ और! जबकि इन्हें किसी धर्म के खाँचे से अलग एक निजी दुनिया के मनुष्यत्व के तहत देखने की आवश्यकता है। अपनी संस्कृति, सभ्यता खुद की इनकी

मूल्यवत्ता है। इस पर लेखिका जोराम यालाम ठीक कहती हैं कि मैं मानती हूँ कि जिस तरह हिंदू, ईसाई अथवा किसी अन्य धर्म वाले लोग धर्मांतरण का काम करते हैं, वे इस अस्तित्वगत संतुलन के विरोध में हैं। जोराम यालाम लिखती हैं कि "आदिवासियत भी एक संस्कृति है जो अपनी विशिष्टताओं के कारण अन्य संस्कृतियों से अलग पहचान रखती है लेकिन वह किसी की विरोधी नहीं है। वह विभिन्न संस्कृतियों के अस्तित्त्वगत संतुलन के खिलाफ नहीं है। मैं मानती हूँ कि जिस तरह हिंदू, ईसाई अथवा किसी अन्य धर्म वाले लोग धर्मांतरण का काम करते हैं, वे इस अस्तित्वगत संतुलन के विरोध में हैं। यही मूल कारण था कि मैंने तानी कथाओं के साथ-साथ तानी दर्शन पर काम करना अति आवश्यक समझा।"[1]

आज हम लोग जिस दौर में हैं, वह दौर सांस्कृतिक विस्थापन का है। पौराणिक प्रतिमानों को भूलने का समय है। मनुष्यता के नाते अपनी संस्कृति-सभ्यता की खोज एक मानवीय गुण है, जिसकी आवश्यकता आजीवन बनी रहेगी। जोराम यालाम ऐसी लेखिका हैं, जो अपने सांस्कृतिक प्रतिमानों पर पड़े धूल को साफ़ करना चाहती हैं। जिस युग में धीरे-धीरे सब कुछ समाप्तप्राय है, उस युग में अपने प्रतिमानों को नूतन मापदंडों के साथ देखना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आदिवासी समुदाय में ऐसा ही एक प्रचलित शब्द है 'जंगली' जिसका सीधा अर्थ होता है, जंगल में निवास करने वाले लोग। आज के दौर में इस शब्द पर कई परतें चढ़ चुकी हैं। देखते-देखते यह शब्द असभ्यता की निशानी हो गया। इस नए प्रतिमान से लेखिका जोराम यालाम मुठभेड़ करती हैं और एक नए संदर्भों के साथ इसे हमारे सामने रखती हैं। जहाँ वह जोर देकर कहती हैं कि जंगली होने से सीधा सा अर्थ प्रकृति से जुड़ना है। प्रकृति और मनुष्य का संवाद जिस युग में छूटता जा रहा हो, उस दौर में जंगली होने का सीधा अर्थ अगर असभ्य हो गया है, तो इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। यह युग प्रतिमानों के छीजने का युग है। जंगली होने के जो मायने जोराम यालाम ने रेखांकित किए हैं, वे किसी सुंदर संगीत से कम नहीं हैं। जोराम यालाम लिखती हैं कि " "जंगली" होने का अर्थ मेरे लिए इस प्रकार है- प्रकृति से जुड़ना। उनके साथ स्वयं को अभिन्न अंग जानकर चलना। फूलों के साथ जो मुस्कुरा सके। नदी की बहती लहरों का गान सुन सके। हृदय के अंतरतम समुद्र से जो सूक्ष्म पुकार आती है- उसे सुन सके। सूरज की स्वर्णिम किरणों-सा बिखर सके। एक हाथ तारों को छूए और दूसरा जमीन को। पथरीले शिखरों पर बिखरी चुटकी-भर मिट्टी में भी उग-उग आना। क्षण भर खिलकर मर जाना। चाँद न छिटकाए चाँदनी, सूरज काली चादर ओढ़े सो जाए, जंगली फूल फिर भी खिलता और महकता रहता है। उन स्थानों पर भी खिलता है, जिसकी कल्पना तक हम नहीं कर सकते। यह एक सतत यात्रा होती है। बिल्कुल नदी की तरह। नवीनतम चाल से चलने का साहस। भय का सामना करने का साहस। यही जंगलीपन है।"[2]

अक्सर बड़ी संस्कृतियाँ छोटी संस्कृतियों को प्रभावित करती हैं, उसे मिटाना चाहती हैं, अगर वह अपने इस उपक्रम में असफल रहती हैं, तो थोड़े फेरबदल के साथ उसे बदल देने को आतुर रहती हैं। हम अपने धर्म, संस्कृति , समाज के प्रति अगर सजग नहीं हैं, तब वह आपको बदल देगा। दुनिया में तमाम ऐसी संस्कृतियां हैं, जो बदल चुकी हैं। कई ऐसी भाषाएँ हैं, जो विलुप्त हो चुकी हैं या खत्म होने की कगार पर हैं। इसमें तमाम विसंगतियों को दोष दिया जा सकता है, आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है लेकिन यह वक्त किसी को जिम्मेदार ठहराने का नहीं बल्कि सजग होने का है, ठहरकर सोचने का है।

आदिवासी समाज पर तमाम खतरों के बीच एक खतरा धार्मिक बंदरवाट का है, जहाँ सभी बड़े धर्म उसे अपनी ओर, अपने में समाहित करने को आतुर हैं। ऐसा नहीं है कि यह हाल सिर्फ भारत में है, कमोबेश यही स्थिति पूरी दुनिया में कायम है। लेखिका इन परिस्थितियों से वाकिफ़ और सजग हैं। आदिवासी समाज को इस तरह के संगठित संगठनों से सजग करती हैं, जो इनकी संस्कृति और प्रतिमानों को बदल देना चाहते हैं। इन बदलते प्रतिमानों और धार्मिक उथल-पुथल को लेखिका इस तरह रेखांकित करती हैं- "इसी बीच किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'तुम शैतान को पूजने वाले नहीं हो। तुम तो हिंदू हो! मैं हिंदू हूँ! तुम भी सूरज को पूजते हो, मैं भी सूरज को पूजता हूँ। देखो, हम एक ही तो है।' इस अपनेपन ने उनको बड़ा सहारा दिया। इससे एक तरह का आंदोलन शुरू हो गया। ..... यदि हम हिंदू हैं तो इसका अर्थ है कि संसार के प्रत्येक देश के आदिवासी भी हिंदू हैं, क्योंकि आदिवासी मात्र भारत में ही तो नहीं रहते।"[3] इन धार्मिक स्थितियों के दबाव में जिन्होंने अपना धर्म बदल लिया, जिन्होंने दूसरी संस्कृति और सभ्यता को अपनाया वह तमाम समस्याओं में जी रहे होंगे। अपनी संस्कृति और भाषा से विछोह मनुष्य के लिए एक अभिशाप है। डर, भय, लोभ के बीच अपनी संस्कृति और प्रकृति से नाता तोड़ना एक सांस्कृतिक क्षरण है। "जिन समुदायों ने अपनी पहचान मिटाकर दूसरों के नाम को अपना लिया; उनको प्रारंभ में भले ही खुशफहमी हुई हो, लेकिन अंतत: उन्हें अपने इतिहास, भाषा, दर्शन आदि सबसे वंचित होना पड़ा। अब उनकी नई पीढ़ी एक भिन्न तरह की समस्या से जूझ रही है; और एक नया परंतु दुखद इतिहास बनने लगा है। पूर्वजों का किया धरा कोई ओर क्यों भुगते? ईश्वरों के नाम पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी के लिए संताप पैदा करने का अर्थ क्या है?"[4]

इस पुस्तक को जो सबसे अधिक विशेष बनाती है, वह है तानी दर्शन! मेरे जानने में यह पहली बार है, जब तानी दर्शन को लिखित रूप में दर्ज किया जा रहा है। किसी भी सभ्यता, समाज और संस्कृति को अगर जानना और समझना हो तो सबसे पहले उस समाज के मूल यानी दर्शन को समझना महत्त्वपूर्ण होता है। समाज किस तरह सोचता है, क्या ग्रहण करता है, क्या छोड़ता है, पहनावा-ओढ़वा, आचार-विचार सब कुछ संस्कृति का एक हिस्सा होता है। तानी दर्शन में भी अरुणाचल प्रदेश का जो तानी समुदाय है, उसकी विस्तृत रूपरेखा और संरचना हमारे सामने आती है। लेखिका तानी दर्शन के मूल में 'जिमी-जामा' को मानती हैं, यहीं से तानी दर्शन का विकास माना जाता है, इसे किसी भी शब्द, भाषा, वाक्य से व्यक्त करना मुश्किल भरा है। तानी समुदाय में यह मान्यता है कि जब जिमी-जामा ने अपनी आँखें खोली तभी रोशनी का जन्म हुआ, समय, काल, दिन, रात सभी का अस्तित्व जिमी-जामा के सिद्धांत से जुड़ा है। सूर्य, चंद्र और धरती के मिलन से अनेक जीव पैदा हुए, इन अनेक जीवों की उत्पत्ति में मानव सबसे बाद में अस्तित्व आता है। अमूमन हम मानव जीवन को सर्वश्रेष्ठ और ताकतवर मानते हैं लेकिन जिमी-जामा का यह सिद्धांत बताता है कि मनुष्य सबसे छोटा था। कमजोर था। चर-अचर सभी जीव मानव को आगे बढ़ाते थे क्योंकि अनेक चर-अचर जीव छोटा भाई मानते हैं। मनुष्य और प्रकृति के सामंजस्य के लिए ये नियम निर्मित किए गए होंगे ताकि मनुष्य अपने को सर्व शक्तिमान मानकर प्रकृति से छेड़छाड़ न करे। लेखिका मानव जीवन के अस्तित्व पर दर्ज करती हैं कि "मनुष्य सबसे बाद में उत्पन्न हुआ। इसलिए वह सबसे छोटा है। सबसे कमजोर भी है। अस्तित्व में दिखने वाले, न दिखने वाले सभी चर-अचर मिलकर उसको देते हैं क्योंकि वह उनका अपना छोटा भाई है। मनुष्य उन सभी पर आश्रित है। एक

छोटा-सा कंकड़ भी उससे अधिक शक्तिशाली माना गया है। यही कारण है कि उसे बुद्धि का उपहार मिला। मनुष्य शारीरिक तौर पर दूसरों के मुकाबले कम शक्तिशाली था, लेकिन अपनी बुद्धि का उपयोग कर उसने हथियारों का आविष्कार किया। इसी से उसका अहंकार बढ़ा।"[5]

यह पुस्तक तानी समुदाय की मान्यताओं और संस्कृति को हमारे सामने रखती है। जीवन के शास्त्र और धर्म को मनुष्यता की कसौटी पर कसकर हमारे सामने लाती है। यह दर्शन मनुष्य और प्रकृति के बीच प्राकृतिक नियमों की गाथा कहती है। जिसकी डोर स्वाभाविक सहजता से बंधी हुई है। लेखिका प्रकृति को एक परम् अनुशासन मानती हैं। मेरा मानना है कि इस पुस्तक में जो तानी कथाएँ संकलित की गई हैं, वे भी किसी अनुशासन से कम नहीं हैं। नैतिकता औऱ आदर्श परक कहानियों का यह एक समूह है, इन कहानियों के माध्यम से ही समाज में अनुशासन, नैतिकता और आदर्श गढ़े जाते होंगे। इन कथाओं के माध्यम से मनुष्य की प्रकृति और समाज से गहरे रिश्ते बनते होंगे। पशु-पक्षी, जीव, जंतु, पेड़, ऋतु सभी को बेहतर तरीके से समझ पाते थे। ये कथाएँ सामाजिक इतिहास की गाथा कहती हैं, समाज के बनने और बिगड़ने की गाथा कहती हैं। यह मिथक संसार की अनेक प्रवृत्तियों पर केंद्रित है, जिसमें माया, मनुष्य, पशु, पक्षी सभी के बनने और बिगड़ने पर मिलते हैं। ये कथाएँ मनुष्य की दार्शनिक जिज्ञासाओं को सुलझाती हैं जो गाहे-बगाहे मनुष्य को परेशान करती हैं। ये कथाएँ आदिवासी समाज के उद्गम और विस्तार की कथाएँ कहती हैं। वैसे तो लेखिका ने कई कहानियों का संकलन किया है, लेकिन कुछ कहानियां ऐसी हैं जो मनुष्य की आदिम जिज्ञासाओं और आदर्शों को हमारे सामने रखती हैं। ऐसी ही एक तानी कथा पूंग चुब्नाम है। इस कहानी के एक हिस्से में मृत्यु का वर्णन मिलता है, जिसका अपना महत्त्व है, खुद की एक जीवन शैली है और एक अपना विधि-विधान और नियम है। यह नियम आदिम समाज कैसा होगा, उसके बिंब हमारे सामने रखता है। इसका एक स्वरूप देखें जो इस तरह है कि "यह रिवाज नहीं है, तरीके हैं, जिन्हें यह प्रकृति सिखाती है। ताई-रुंगरी को देखो, वे कैसे मिट्टी के अंदर अपना छत्ता बनाती हैं। गुफा इस तरह बनाती हैं कि बारिशों में पानी उनमें ठहरता नहीं। आत्तुम-चारुम को देखो, वह अपने शरीर को कैसे मोड़कर रखती है। दोनों घुटनों से सिर मिल जाता है। जन्म से पूर्व गर्भ में हमारा शरीर ऐसा ही था। जिमी-जमा के गर्भ में हम इसी तरह लौटते हैं। इसके बाद श्वेत वस्त्र से शरीर को ढक देना।"[6] ऐसे ही एक तानी कथा 'दोर्यंग शब्द' है। दोर्यंग शब्द से अर्थ, दस मिथुन का है। मिथुन का आबोतानी समाज में पवित्र स्थान है, वैसे ही जैसे हिंदू धर्म में गाय का स्थान है। यह कहानी मनुष्यता को हमारे सामने रखती है। यह कहानी बलि प्रथा जैसी कुप्रथाओं के ख़िलाफ़ है।

इस कहानी में अबोतानी का विलाप है, जो मिथुन को बचाना चाहते हैं। वह कहते हैं कि "सुनो ताज ताकार, एक साथ इतने सारे मिथुन को काट गिराना खतरनाक है। यह अच्छी बात नहीं है। इसके लिए कुछ नियमों का पालन करना चाहिए, नहीं तो इन पशुओं की आत्माएँ तुम्हें परेशान करेंगी। तुम्हारी होने वाली पत्नी और भावी संतानों पर मुसीबतें आएँगी।"[7]

इस तरह की अनेक कथाएँ इस समाज में व्याप्त थी, जो सत्य के निकट और विश्वसनीय है। ताम मेनाम सूर्य ग्रहण की कथा कहती है, तो कई कहानियां सांप और चाँद से जुड़ी हैं जो बहुत ही रोचक है। इन कहानियों में रोचकता तो है ही, लेकिन इन कहानियों को इस दृष्टि से भी पढ़ा जाना चाहिए कि ये कहानियां एक समय

सामाजिक सत्ताओं में आदर्श और नैतिकता गढ़ती थी। मनुष्यों के रीति रिवाज और परिश्रम की गाथा कहती थी। मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना भारत-भारती की एक पंक्ति याद आ रही है जो कुछ इस तरह है कि 'हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी' यह पुस्तक वाद-संवाद की ओर ले जाती है जो यह कहती है कि आओ बैठकर विचारें की हम क्या थे। आज यह भी विचार करने की जरूरत है कि आगे की दिशा-दशा क्या होगी? आज भूमण्डलीकरण की आग में संस्कृति और सभ्यताओं पर सबसे अधिक खतरा है। जिस दौर में हम जी रहे हैं, वहाँ प्रकृति और मनुष्य का संबंध छीज रहा है, व्यक्ति का भौतिकवाद प्रकृति, समाज, जंगल सभी को नष्ट कर देने के आतुर है। आज संवादी और सामूहिकता के साथ सचेत होने की आवश्यकता है। जोराम यालाम एक ऐसी लेखिका हैं, जो अपनी सभ्यता, संस्कृति, जल, जमीन को लेकर सजग हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि जोराम अपनी पुस्तक के माध्यम से संकटग्रस्त मानव सभ्यता के दौर में एक विकल्प प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ-

[1] जोराम यालाम नाबाम, तानी कथाएं, राधाकृष्ण प्रकाशन, पहला संस्करण- 2022, पृष्ठ-25
[2] वही, पृष्ठ-21
[3] वही, पृष्ठ-22
[4] वही, पृष्ठ-23
[5] वही, पृष्ठ-34
[6] वही, पृष्ठ- 82
[7] वही, पृष्ठ-98

*(**लेखकीय परिचय :** विक्रम कुमार वर्तमान में राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। मोबा:6201761772, ई-मेल : vkbrb025@gmail.com)*